कुमार जीवन - 5

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ जैसे शारीरिक ड्रिल सुबह को कराई जाती है, वैसे **यह अव्यक्त ड्रिल भी अमृतवेले विशेष रूप से करना है। करना तो सारा दिन है लेकिन विशेष प्रैक्टिस करने का समय अमृतवेले है।**

➳ _ ➳ **जब देखो बुद्धि बहुत बिजी है तो उसी समय यह प्रैक्टिस करो - परिस्थिति में होते हुए भी हम अपनी बुद्धि को न्यारा कर सकते हैं। लेकिन न्यारे तब हो सकेंगे जब जो भी कार्य करते हो वह न्यारी अवस्था में होकर करेंगे।** अगर उस कार्य में अटैचमेंट होगी तो फिर एक सेकेण्ड में डिटैच नहीं होंगे। इसलिए यह प्रैक्टिस करो। कैसी भी परिस्थिति हो।

➳ _ ➳ क्योंकि फाइनल पेपर अनेक प्रकार के भयानक और न चाहते हुए भी अपने तरफ आकर्षित करने वाली परिस्थितियों के बीच होंगे। उनकी भेंट में जो आजकल की परिस्थितियां है वह कुछ नहीं हैं। जो अन्तिम परिस्थिति आने वाली है, उन परिस्थितियों के बीच पेपर होना है। इसकी तैयारी पहले से करनी है।

➳ _ ➳ इसलिए **जब अपने को देखो कि बहुत बिज़ी हूँ, बुद्धि बहुत स्थूल कार्य में बिज़ी है, चारों ओर सरकमस्टान्सेज अपने तरफ खैंचने वालें है; तो ऐसे समय पर यह अभ्यास करो। तब मालूम पड़ेगा कहाँ तक हम ड्रिल कर सकते हैं। यह भी बात बहुत आवश्यक है। इसी ड्रिल में रहते रहेंगे तो सफलता को पायेंगे। एक-एक सबजेक्ट की नम्बर होती है। मुख्य तो यही है। इसमें अगर अच्छे हैं तो नम्बर आगे ले सकते हैं। अगर इस सबजेक्ट में नम्बर कम है तो फाइनल नम्बर आगे नहीं आ सकते।**

➳ _ ➳ इसलिए सुनाया था कि 'ज्ञानी तू आत्मा' के साथ में स्नेही भी बनना है। जो स्नेही होता है वह स्नेह पाता है। जिससे ज्यादा स्नेह होता है, तो कहते हैं यह तो सुध-बुध ही भूल जाते हैं। सुध-बुध का अर्थ ही है अपने स्वरुप की जो स्मृति रहती है वह भी भूल जाते हैं। बुद्धि की लगन भी उसके सिवाए कहाँ नहीं हो। ऐसे जो रहने वाले होते उनको कहा जाता है स्नेही।

➳ _ ➳ इस ग्रुप का विशेष गुण यही है कि सभी बातों को सीखने और धारण करने और आगे के लिए भी अपने को उसमें चलाने के लिये चात्रक हैं। चात्रक बने हो लेकिन साथ में चरित्रवान भी बनना है। चात्रक हैं, यह इस ग्रुप की विशेषता है। लेकिन चात्रक का कार्य होता है उसके प्यासे रहना। यह चित्र चरित्र में देखें, तब फिर चात्रकों के साथ में पात्र भी कहेंगे। अभी चात्रक तो हैं। फिर रिजल्ट आने के बाद दो टाइटिल मिलेंगे, अभी चात्रक हैं, फिर विजय माला के नज़दीक आने के पात्र भी होंगे। जो सलोगन सुनाया और जो भट्ठी की छाप सुनाई उनको कायम रखेंगे तो दोनों ही गुण आ जायेंगे।

➢➢ ब्राह्मण पाप कर्म , विकर्म नहीं करते ... <u>पर समस्या ये है की जो अच्छे कर्म ब्राह्मण करते हैं... उनमें attach हो जातें हैं</u>

➢➢ कर्मों में detach कैसे रहे ?

➳ _ ➳ निमित भाव

→ कराने वाला करा रहा है... करनहार हम किये जा रहे....

- I Am An Instrument
  - हम में ये सब करने की ताकत नहीं है
  - उसकी शक्तियों से सब कार्य हो रहे हैं

- उसकी दया , कृपा, आशीर्वाद से सब कुछ हो रहा है..
- अगर उसकी कृपा हमसे छीन ली जाए तो हम गिर पड़ेंगे

- कर्म से पूरी तरह से अनासक्त
  - कर्म किया और उसके बाद पता नहीं की क्या किया
  - जैसे कोई पॉवर आई और करा के चली गयी...

➳ _ ➳ सदैव स्मृति रखें की

→ हमसे भी ज्यादा अछे और ज्यादा योग्यता से यह कार्य करने वाली आत्माएं और बहुत हैं

→ हम नहीं रहेंगे तो भी यह कार्य सुचारू रूप से चलता रहेगा

→ अगर हम यह सोचते हैं की हमारे बिना यह कार्य नहीं हो सकता है तो

- यह हमारा भ्रम है

→ स्वयं को अनिवार्य मत समझिये

→ सेवाओं पर पकड जमा कर मत बैठिये

- पकड को ढीला कीजिये
- मोह में पकड है... आमोह में प्रवाह है

→ यह हमारा भाग्य है की

- हमें यह कार्य दिया गया है

→ आपकी विशेषताएं प्रभु प्रसाद हैं

- विशेषताओं को सेवा में जितना लगायेंगे... यह और बढेंगी...
  - विशेषताओं का अहंकार आने से विशेषताएं कम होने लगेंगी

→ यह पार्ट केवल थोड़े ही समय के लिए है

- तो मैं इसमें क्या आसक्ति रखूँ ?

→ कर्म को पूरी तरह से प्रभु को अर्पित कर दें

➳ _ ➳ किसी से प्रशंसा की उम्मीद न रखें

➳ _ ➳ Adjustability....

→ अगर अकेले रहना पड़े तो भी ठीक... अगर संगठन में रहना पड़े तो भी ठीक...

→ कभी स्थान बदल जाए तो भी ठीक

→ कोई सहयोग दे तो भी ठीक... कोई सहयोग न दे तो भी ठीक...

➳ _ ➳ **मधुबन में सेवाधारी बनकर रहने के लिए बहुत ज्ञान की आवश्यकता है**

- मधुबन में सेवाधारी बनकर रहना ही एक साधना है